**x

प्रथम अध्याय : व्यक्तित्व और कृतित्व

जन्म, अश्क का बचपन, शिक्षा, विवाह, त्यागमयी कौशल्य, नीलाभ प्रकाशन की स्थापना और उददेश्य, निष्कर्ष अश्क के नाटक, अश्क के एकांकी संग्रह, अश्क के उपन्यास, कहानी संग्रह, काव्य-संग्रह, विचार ग्रंथ, अनुवाद, सम्पादन, संस्मरण, निष्कर्ष ।

**x

- व्यक्तित्व -

साहित्यकार का साहित्यिक परिचय इसलिए जरुरी हैं, कि उसके जीवन और साहित्य का संबंध अटूट होता हैं । साहित्यकार जीवन में जो भी कुछ देखता हैं उसे वह अपने साहित्य में उतारने का प्रयास करता हैं । जीवन की अग्नि में भली-बुरी अनुभूतियाँ जब पकने लगती हैं, तब वह दिल का ढक्कन खोलकर अपने आप भाप की तरह बाहर आती हैं । लेखक उन्हीको शब्दों में बाँधकर समाज के सामने ले आता हैं । अपनी अनुभूति, भावावेश की तीव्रता में वह कुछ ऐसा लिखता हैं, कि पढनेवालों को ऐसे लगता हैं, कि यह मेरे ही दिल की बात लिखी हो । तब वह साहित्य मर्म को छू लेनेवाला और श्रेष्ठ साहित्य बन जाता हैं । साहित्यकार जीवन की चक्की में जितना अधिक पिसता हैं, उतनी ही गहरी अनुभूतियाँ उसके साहित्य में उतर आती हैं । सुरेशचंद्र शुक्ल जी ने लेखक के बारें में अपना मत प्रकट करते हुऐ लिखा हैं - " कोई भी साहित्यकार जीवन में चाहे जितना तटस्थ हो, फिर भी उसके साहित्य में जीवन के कुछ-न-कुछ अंश जाने-अनजाने आ ही जाते हैं । साहित्यकार का व्यक्तित्व उसके साहित्य में निहित होता हैं, इसलिए उसके साहित्य के मूल में पहुँचने के लिए उसके जीवन में पहुँचने की आवश्यकता होती हैं । "

साहित्य और समाज का भी संबंध अभिन्न होता हैं । साहित्यकार समाज का चित्रण अपने साहित्य में करता हैं । साहित्यकार भूत, भविष्य और वर्तमान काल को देखकर जीता हैं । " साहित्यकार के लिए अतीत का कोई अर्थ नहीं, यदि वह वर्तमान को प्रेरणा न दे, वर्तमान का कोई मतलब नहीं, यदि वह भविष्य के लिए कोई सपने न दे । सच्चा साहित्यकार अतीत को वर्तमान के लिए लेता हैं और वर्तमान को भविष्य के लिए । वह अतीत में नहीं जीता, वह जीता वर्तमान में हैं, और देखता वह भविष्य की ओर हैं । " [1]

---

1) भैरव प्रसाद गुप्त   नाटककार अश्क (परिचय-व्यक्तित्व)   पृ.सं. 46।

1. **जन्म :-**

" उपेंद्रनाथ अश्क जी का जन्म पंजाब प्रांत के जालंधर नामक नगर में 14 दिसम्बर 1910 में हुआ । अश्क जी छः भाइयों में दूसरे है । " [2] वैसे इनका परिवार बडा हैं । " अश्क जी भारद्वाज गोत्र के सारस्वत ब्राह्मण हैं । इलाहाबाद के निकट ' जसरा ' एक गाँव का नाम है और अश्क जी का ऐसा अनुमान हैं कि उनके पूर्वज यहीं से गये होंगे । " [3] उनके पिता का नाम पंडित माधोराम था । पंडितजी रेल में स्टेशन मास्टर थे । पं. माधोराम का विवाह तेरह बरस की आयु में ही होशियारपूर के प. रुद्रमणि मिश्र की कन्या बसंतीदेवी से हो गया था ।

2. **अश्क का बचपन :-**

अश्क जैसे साहित्यकार पर अपने माता-पिता के विचारों का प्रभाव पडना स्वाभाविक हैं । बालमन पर तो माता और पिता का प्रभाव पडना इसलिए स्वाभाविक होता हैं, कि वह बचपन से ही अपने माँ-बाप के नजदीक होने के कारण उनका अनुकरण वह जीवनभर करता ही हैं । और उसके आधारपर ही वह अपनी मंझिल भी बनाता हैं । मंझिल की ओर बढने के लिए माता-पिता के विचार ही उसे प्रोत्साहित करने का काम करते हैं । उसी रास्ते पर वह आगे बढता हैं और जीवन को सफल बनाने का प्रयास करता हैं । अपने स्वजनों की आशा-आकांक्षा को परिपूर्ण करने के लिए वह जीवन में भाग-दौड करता हैं । माता-पिता और अन्य स्वजनों की अधूरी ख्वाहिश पूरी करता हें । जब उसके यह अरमान पूरे होते है तब उसके दिल को शांति मिलती हैं ।

अश्क जी के माता-पिता जीवन में इतने सुखी नही थे फिर भी उन्होंने अपने लडकों के लिए शिक्षा भी दे दी । एक ओर उनके पिता क्रूर, जालिम, पक्के शराबी-कबाबी,

---

2) हिंदी साहित्य कोश भाग 2 पृ.सं. 50

3) कपिलदेव राय साहित्यकार अश्क पृ.सं. 17

फक्कड थे तो दूसरी ओर वे मनमौजी और दरियादिल वाले आदमी भी थे । " अश्क के पिता जी अजीब मन-मौजी और रंगीले आदमी थे, पीने की उन्हें लत बडी थी, दीवाली के दिनों जुआ खेलना - और सब कुछ भुलाकर जुआ खेलना उन्हें पसंद था । कई बार सारे का सारा वेतन हार देते थे । "[4]

एक ओर अश्कजी के पिता मन-मौंजी व्यक्तित्ववाले थे तो दूसरी ओर उनकी माता ममतामयी थी । गाय जैसी प्रकृति वाली स्त्री के साथ उनका विवाह हुआ था । इसके अतिरिक्त पंडित माधोराम बडे उदार दिलवाले भी थे, कोई उनके आश्रय में आये और उन्हें वे आश्रय न दें ऐसा कभी नहीं हुआ । कोई उनके सामने याचना के लिए हाथ फैलाएं और वे ना कहे यह कभी नहीं हुआ । कभी-कभी इसके लिए उन्होंने अपने बीवी के गहने भी गिरवी रखे और उस के लिए उन्होंने कोई न कोई इंतजाम किया । इस परोपकार में कभी-कभी अपने बेटों का भी ध्यान नहीं रहता था । इतने वे उदार दिलवाले आदमी थे । अश्क जी पर माता का भी प्रभाव दिखाई देता हैं लेकिन इसमें भी ज्यादा प्रभाव उनपर पिता का ही नजर आता हैं ।

अश्कजी का बचपन दुखमय रहा हैं । वे हर दम, हर घडीं जीवन के साथ जूझते हुऐ नजर आते हैं । " इन्होंने जीवन में अतीव कडवे प्याले भी पिये हैं और मीठे भी, बाहुल्य भी देखा हैं और तीव्र उपेक्षा भी । " [5] इसतरह उनका शैशव घोर गरीबी, अभाव और कलहपूर्ण वातावरण में बीता उन्होंने खुद लिखा हैं -- ' न बचपन में बचपन देखा न युवावस्था में जवानी । "

समरांगण के दीप जलेंगे ।
अंधकार से सतत लडेंगे । [6]

हमेशा उन्होंने अंधकार के साथ दो हाथ किये हैं । अश्कजी कभी हार माननेवाले नहीं थे उनके मन में हमेशा आशा समायी रहती थी इसलिए वे कहते हैं - " क्यों

---

4) निर्मलचंद श्रीवास्तव नाटककार अश्क (जिवन परिचय) पृ.स.486
5) कौशल्या अश्क दो धारा पृ.सं. 27
6) उपेंद्रनाथ अश्क दीप जलेगा पृ.सं. 17?

छोड़ूँ आशा का अंचल । " इसतरह वे परिस्थिति से मुकाबला करते हैं और आशाओं के सावन में जीते हैं । बडी उमंगें के साथ उन्होंने जीवन की ओर देखा और दुख को ठोकर मार दी । दु:ख, कष्ट और अभाव को उन्होंने हँसते-हँसते झेला ।

माता-पिता और अश्क के प्रकृति में इतना विरोधाभास होते हुऐ भी उनके जीवनपर अपने माता-पिता के चरित्र का गहरा प्रभाव पडा हैं । " अश्कजी को माँ से लोंह इच्छा-शक्ति एंव नैतिकता मिली थी और पिता से जीवन के आमुल्य सूत्र, जिनें वे अपनी जिन्दगीभर नहीं भूल पाये । उसी प्रेरणा से उन्हें जिंदगी में कुछ करने की शक्ति मिली । "[7] उन्होंने स्वंय लिखा हैं --- " पिता के इन उपदेशों से, उस घोर गरिबी से उपर उठने और दुनिया में कुछ बनने की साध किशोरावस्था ही से मन में पैदा हो गयी थी ---- ' ए फूल इज बाउण्ड टू सफर, " पिता कहते शिक्षा प्राप्त करो तो विद्वान बन जाओ। ---- मिडियाकार को कौन नहीं पूछता , इसलिए किसी कसब, किसी व्यवसाय में कमाल हासिल करो, गुण्डे बनो तो शहर के सबसे बडे गुण्डे बनो, शायर बनो तो टैगोर और शेक्सपियर । "[8] इसप्रकार के उपदेश पिताजी उन्हें हमेशा देते थे, जो उनके बालमनपर इसका प्रभाव पत्थर की लकींर की तरह हो गया था । अश्क जी के शैशव में जो मिला था वह उनके माता-पिता ने उन्हे घुट्टी के रुप में ही पिलाया था इसलिए ही उनके स्वभाव में यह उपदेश उतर गये थे । इसलिए उन्होंने खुद कहा है कि अगर मुझे सही अर्थों में जानना है तो मेरे माता-पिता को जानना होगा । और विशेष करके मेरे पिता को । क्योंकि मैं उन्हीं का बनाया हुआ पुत्र हूँ ।

3. **शिक्षा :-**

अश्कजी बचपन में अपने पिताजी के साथ हिसार, बुगाना और सैला खुर्द आदि

---

7) डा. कपिलदेव राय — साहित्यकार अश्क — पृ.सं. 20

8) उपेंद्रनाथ अश्क — कुछ दूसरों के लिए — पृ.सं. 182

स्टेशनोंपर आठ नौं बरस तक घूमते रहे । जब उनके पिताजी की तब्दीली रिलीविंग में हुई तो वे कोयटा चले गये और माताजी बच्चों समवेत जालन्दर चली आयी । अब तक माता और पिता के संरक्षण में ही अश्कजी की प्रारंभिक शिक्षा घरपर ही हो रही थी । इसके बाद उन्हें सीधे तीसरी कक्षा में भर्ती करा दिया गया । तीसरी कक्षा में शिक्षा के लिए वे जालन्दर के साईदास एंग्लो संस्कृत हाईस्कुल के प्राइमरी शाखा में जाने लगे । बचपन से ही घरपर पढने के कारण उन्हें बहुत से संस्कृत और अंग्रेजी के वाक्य-रुप कंठस्थ हो गये थे । 1921 में उन्होंने प्रायमरी स्कूल की परीक्षा देकर उसी संस्था के हायस्कुल में जाने लगे ।

अश्कजी ने 1927 में मैट्रिक की परीक्षा द्वितीय श्रेणी में पास की और उन्होंने जालंधर के डी.ए. वी. कालेज में इण्टर करने के लिए चले गये । 1929 में इण्टर की परीक्षा की और उन्होंने 1931 में उसी कालेज से बी.ए. की तृतीय श्रेणी में डिग्री ले ली । उन्होंने बी.ए. में बहुत ही परिश्रम किया था और अपने कक्षा में प्रथम भी आये थे लेकिन उन्हें डिवीजन न मिल पायी । उनकी यह इच्छा थी की आगे एम.ए. में इस पर लगे हुए कलंक को मिटाऊँगा । पर आर्थिक स्थिति अपना मुँह फैलाकर उनके सामने खडी थी । माँ-बाप के तानें सुनाई दे रहे थे इसलिए उन्होंने नौकरी करना प्रारंभ किया । अपने स्कुल में ही अध्यापक बने ।

अश्क के मन में सुरु सेही शिक्षा के प्रति लगन थी । जालन्धर में अगर एम. ए. की कक्षा होती तो वे कभी के कर देते लेकिन वह लाहौर में होने के कारण वे कुछ नहीं कर सकते थे । दूसरी ओर आर्थिक समस्या भी उनके सामने थी । 1933 में उन्होंने अध्यापक की नौकरी छोड दी और जीविकोपार्जन के हेतु साप्ताहिक पत्र ' भूचाल ' का सम्पादन किया । एक अन्य साप्ताहिक ' गुरु घंटाल ' के लिए प्रति-सप्ताह एक रुपये कहानी लिखकर दी । इसके बीच उन्होंने और भी कुछ काम किया । कभी उन्होंने कार्य से जी नहीं चुराया ।

लेकिन अचानक उनके जीवन में नया मोड आया और उन्होंने 1934 में सब कुछ छोडकर लॉ कालेज में प्रवेश लिया । सतत परिश्रम और लगन से उन्हौंने 1936 में लॉ फर्स्ट डिवीजन में पास किया । जिस बीवी के लिए उन्होंने इतना सब कुछ किया, वह पत्नी ही उन्हें छोडकर संसार से चली गयी । पत्नी के मान-सम्मान के लिए उन्होंने लॉ किया था, लेकिन वह ही रुठकर चली गई तबउनका दिल टुट गया । पत्नी यक्ष्मा की लंबी बीमारी का शिकार हो गयी । अश्कजी 700 छात्रों में आठवें और प्रथम श्रेणी लेकर डिस्टिंक्शन में आये थे । लेकिन उनके सपनों का महल ही ढ़ह गया । अश्कजी ने अपनी कानून की किताबे बेच दी, कचहरी को तिलांजली दे दी, और सब-जज बनने का खयाल भी उन्होंने छोड दिया । तब से वे स्वतंत्र रुप से साहित्य - सृजन का कार्य कर रहे है ।

स्वतंत्र साहित्य - सृजन के लिए उन्होंने देशी- विदेशी पुस्तकों का विस्तृत अध्ययन किया । सतत परिश्रम यह उनके जीवन का अविभाज्य अंग बन चुका था । अश्क ने बड़ी लगन और अनवरत चिंतन से, जी तोड मेहनत से सृजन का कार्य बड़ी जिद् से जारी रखा । उर्दू, पंजाबी हिंदी तो उनकी आधिकारिक भाषाएँ हैं । अंग्रेजी साहित्य का भीउन्हें उच्छा - खासा ज्ञान है । अंग्रजी साहित्य भी उन्होंने बहुत पढ़ा हैं । बंगला, गुजराती तथा मराठी आदि भाषाओं का थोडा - बहुत ज्ञान उन्हें है । उनका पुस्तकालय विशाल एवं देशी - विदेशी पुस्तकों से भर पड़ा है । कठिन जीवन संघर्ष और आर्थिक समस्या के होते हुऐ भी उन्होंने साहित्य साधना नहीं छोडी बल्कि स्फूर्ति के साथ आज भी वे उसी तरह काम करते है जैसे पहले करते थे ।

4) **वि वा ह :-**

जीवन की नैया जब भँवरों के बीच गोते खाने लगती है तब उसे कुशल नाविक ही बचा सकता है, उसी तरह इस असंगतिमय जीवन से गुजरना है, तो पति को समझने वालो

उनपर विश्वास रखनेवाली सँभालकर ले चलने वाली ही पत्नी होनी चाहिए । जीवन मे सभी सुख-दःखों पर प्रेम करनेवाली हँसी में कहेकहें लगानेवाली और दुःख मे कराहनेवाली अश्कजी को पत्नी चाहिए थी । वह उन्हें बहुत ही खोज - बीन के बाद मिल गयी तब उनका मन अनायास ही गा उठा :

"तुम हो सुभगे
मेरी सहचरी, मेरी मंत्रिणि,
मेरे कर्म क्षेत्र की संगिनि
पग से पग
कंधे से कंधा
सदा मिलाकर चलने वाली ।"[9]

अश्कजी मानते हैं, कि पुरुष के जीवन में पत्नी का स्थान सबसे बड़ा है । वे कहते है - 'लेखक चाहे दस औरतों के साथ रहे, वह जब तक घर नहीं बसाता, घर में पत्नी नाम की स्त्री को नहीं लाता, बच्चे नहीं पैदा करता तब तक जिन्दगी की गहनतम अनुभूतियों से वंचित रह जाता है । और यही कारण है कि योग्य स्त्री के लिए उन्होंने जीवन में एक नही दो नहीं, तीन - तीन शादियाँ की । जब उन्हें अपने सुख दुःख में शरीक होनेवाली पत्नी मिली, तब उनके मन के बाग खिल गये और उन्होंने वायु के साथ झोंके लेना प्रारंभ कर दिया ।

कवि या लेखक के लिए जीवन में मानसिक स्वास्थ्य नहीं है तो वह जीवन सागर में तैरता है लेकिन गहराई में जाकर असली मोतियों की खोज नहीं कर सकता । इसलिए जरुरी यह होता है, कि अनुभूति के लिए उसे स्वास्थ वही स्त्री दे सकती है जो उनके जीवन में पतझर में सावन बनकर आती है ।

---

9) अश्क दीप जलेगा पृ.सं. 168

अश्क जी की पहली पत्नी सरल, किन्तु अशिक्षित, ग्रामीण लडकी थी । प्रथम पत्नी का नाम शीलादेवी था । उनका विवाह बस्तीगंजा में हुआ । शीलादेवी शान्त और सरल स्वभाववाली नारी थी । अश्क जी को पहली पत्नी इतनी पसन्द नहीं आयी थी लेकिन तीन-चार बरस के साहचर्य से उसे दिलों-जान से चाहने लगे थे । परन्तु भगवान को यह मंजूर नहीं था अश्क जी लॉ के प्रथम वर्ष में पत्नी के सन्मान के खातिर गये ही थे कि शीलादेवी को यक्ष्मा ने जकड लिया । अपना सारा समय निकालकर अश्कजी पत्नी की सेवा में लगे रहते । उसे किसी बात की तकलीफ न हो इस ओर उनका अधिक ध्यान रहता । अपने सीमित साधनों में अश्कजी ने उसकी भरसक सेवा की । उस समय यक्ष्मा के रोगी को बचाने के लिए जिन साधनों की आवश्यकता थी, उसका उनके पास नितान्त अभाव था। अपनी सारी कोशिश-इलाज के बावजुद भी वे उनको नही बचा पाये । इधर उन्होंने लॉ प्रथम डिविजन में पास किया और उधर अपनी लम्बी बीमारी के बाद ।। दिसम्बर 1936 को शीलादेवी सदा के लिए अश्कजी को छोडकर भगवान को प्यारी हो गई । पत्नी की मृत्यु से अश्कजी को गहरा आघात हो गया । शीलादेवी और अश्क की एकमात्र संतान श्री उमेश है । अश्क पत्नी के गम के मारे बेचैन हो गये । उनके दिलपर पत्नी के मृत्यु का सदमा बैठ गया । वे खोये-खोये और व्याकुल से रहने लगे उन्होंने उस समय की स्थिति पर प्रकाश डालते हुऐ लिखा हैं कि - ' इन दो वर्षो के अर्से में मैंने जो भोगा और जिन्दगी का नग्न रुप देखा वह लिखा नहीं जाता । मैंने तभी मौत को नजदीक से देखा और क्षण-क्षण अपनी हृष्ट-पुष्ट, हँसमुख पत्नी को उसके भयावह जबडों में सरकते पाया । घर में कोई भी उसके पास नहीं जाता । परीक्षा पास करने के बाद उसकी मृत्यु के एक महीना पहले तक, मैं ही उसका बिस्तर बिछाता, उसे दवा-दारु ,देता और उसे रोज-रोज घुलते और हाडियों का पिंजरा बनते देखता । अपने हँसमुख स्वभाव के कारण वह तभी हँसती थी और तब अन्धेरी रात में वह मुझे चाँद की तरह दिखाई देती थी । " 10

---

10) उपेंद्रनाथ अश्क कुछ दूसरों के लिए पृ.सं. 184

पहली पत्नी की मृत्यु से उनके स्वप्निल आशाओं का महल ढह गया और भावी जीवन में भी बेचैनी की आग जल उठी । इसी मनोदशा का चित्रण निम्नलिखित पंक्तियों से लगाया जा सकता हैं ।

' चल दोगी कुटियां सूनी कर
इसी घडी इस याम
युग-युग तक जलते रहने का
मुझे सौंप कर काम । ' 11

पत्नी तो उनके कंधेपर एक बच्चे का भार छोडकर चली ही गई । लेकिन जाते-जाते उसने युग-युग तक जलते रहने का भी काम उनपर छोड दिया । उनमे जो निर्बल इन्सान हैं वह यादों के खातिर चीत्कार कर उठता है -

" नहीं देवता लेकिन मैं तो हूँ, निर्बल इन्सान
रो पडता हूँ, दिल रखता हूँ, नहीं क्रूर पाषाण
कहो, चैन कैसे मैं पाऊँ ?
मन को मैं कैसे समझाऊँ ?
कैसे मैं आँसू न बहाऊँ ?
उजड गयी जब मेरी दुनिया, होते ही आबाद,
जीवन की सूनी घडियों में, प्राण तुम्हारी याद । " 12

पहली पत्नी की मृत्यु के बाद, दूसरी शादी करने की कुछ वैसी अभिलाषा अश्क जी को नहीं थी । लेकिन मजबूरन उनको दूसरा विवाह करना पडा । अश्क जी प्रीतनगर थे

---

11) अश्क दीप जलेगा (विदा) पृ.स. 32
12) अश्क दीप जलेगा (सूनी घडियों में) पृ.सं. 37

तो लाहौर के इस जीवन से ऊबकर ही । लेकिन वहाँ भी ऊब और परेशानी ने उनका पीछा नहीं छोडा । इस परेशानी से तंग आकर उन्होंने अपने बडे भाई से लिखा -' मेरी शादी कहीं तय कर दो । ' अश्क जी के भाई ने एक जगह शादी तय कर दी । लेकिन जब उनके सिरपर का परेशानी का भूत उतर गया तब वह ठण्डे दिल से विचार करने लगे कि बिना देखे-सुने सगाई करना ठीक नहीं होगा । यह बात ध्यान में आने के बाद उन्होंने फिर बडे भाई को लिखा कि - ' सगाई रद्द कर दो । ' लेकिन बडे भाई ने दूर के रिश्ते में सगाई पक्की कर दी थी । इसलिए वे तोडने के लिए तैयार नहीं हो गये । इस उलझन भरे स्थिति में ही कौशल्या से परिचय हुआ । अश्कजी का यह मत था कि दोनों मिलकर चुपचाप शादी कर ले जिसके कारण जो सगाई पक्की कर दी गई है वह आपने-आप टूट जायेगी । पर इसके लिए कौशल्या जी तैयार नहीं थी । कौशल्या चाहती थी की खुले आम अश्क उसके साथ विवाह कर दे और पक्की की गई सगाई तोड दे । कितना चाहने पर भी ऐसा नहीं हुआ । शादी की तारीख भी सगाई के साथ ही तय हो गयी थी । इस असंमजस और द्विधा मन:स्थिति में ही शादी की तारीख भी पहुँची और अश्क अनिच्छापूर्वक फरवरी 1941 में दूल्हा बन गये । इसतरह अश्क की दूसरी शादी हो गयी ।

मायादेवी और अश्क के स्वभाव में काफी अंतर था । वे एक दूसरे को नहीं समझ सके और जो शुरु से आशंका थी वही हुआ । एक ही महीने के उस दिखावटी जीवन के नरक से वे ऊब उठे । अश्क जी का दूसरी पत्नी के बारे में अच्छा मत नहीं था । उन्होंने इसके संबंध में लिखा है -- ' यदि मैं दूसरी पत्नी के साथ रहता तो किसी दिन क्रोध में आकर मैं उसकी हत्या कर देता या स्वयं अपनी । चौथाई सदी बीत जाने पर भी मुझे उस कृत्य पर कभी खेद नहीं हुआ और मेरा गुस्सा अभीतक वैसा का वैसा बरकरार हैं । ' मायादेवी को उमा नाम की कन्या हो गई । उमाजी अब जालंधर में अध्यापिका का काम करती हैं । उमाजी

के तीन बच्चे है ।

अश्क जी दिल्ली रेडिओ में परामर्शदाता का काम करने लगे । तभी सितम्बर की छुट्टियों में कौशल्या जी दिल्ली आई । अश्क जी ने कौशल्या के सामने फिर से चुपचाप शादी करने का प्रस्ताव रखा । अश्क जी का 12 सितम्बर 1941 में कृष्णचंद, सौनरिक्सा, महारथी परिवार की उपस्थिति में तीसरा विवाह कौशल्या जी के साथ हुआ । अश्क जी तीसरी शादी से सतुष्ट नजर आते है । कौशल्या जी उनके अँधेरे जीवन में चाँद की तरह शीतलता और मादकता लेकर आ गयी । तब इस चाँद को देखकर अश्क का कवि मन अनायास गा उठा ।

" मैं भी अकेला हूँ ।
मेरा मन बाथरी की इस अँधेरी घाटी सा सूना है ।
हवा-घर सा खाली हैं ।
अपनी यह सुनहली ज्योत्सना इसमें भर दे । " 13

अश्क जी की जीवन सरिता में कौशल्या जी की भी जीवनधारा आकर मिल गयी और बडी आबाद गति से चलने लगी । इसी वर्तमान पत्नी से अगस्त 1945 में नीलाभ का जन्म हुआ । इसी तरह इनकी गृहस्थि बैठ गयी । अब इलाहाबाद में अश्क जी का एक भरा-पूरा परिवार हैं । बीवी हैं, बच्चे है, बच्चों के बच्चे हैं, बहुएँ है, नौकर-चाकर हैं । सारी सुख-सुविधाओं से अब वे संपन्न हैं लेकिन साहित्य-संघर्ष उनका जारी हैं । इस बुढापे में भी वे जमकर काम करने का प्रयास करते हैं ।

5. **त्यागमयी कौशल्या :-**

कौशल्या जी ने अश्क जी के लिए क्या नहीं किया ? जीवन की टूटी हुऐ गाडी को फिर से तंदुरुस्त करके मार्गक्रमण करना प्रारंभ किया । अश्क जी के लिए उन्होंने

---

13. अश्क सडकों पे ढले सायें (पीला चाँद) पृ.सं. 53

खुद अपनी साहित्यिक प्रतिभा की आहुती दे दी । कौशल्याजी में भी प्रतिभा थी अगर वो चाहती तो काफी कुछ अच्छा लिख भी सकती लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया । खुद कौशल्या जी ने अपने को नींव में जाना पसंद किया क्योंकि उसमें मंदिर का कलस बनने कि अभिलाषा नहीं थी । वह एक सच्ची संगिनी थी, इसलिए ही उन्होंने अश्कजी को सुख में दुःख में हमेशा साथ दिया । जब वे लिखने लगते तब उनकी प्रतिभा बन गयी । जब वे चलने लगते तो जीवन पथ पर दृढता से पैर बढाने की शक्ति दे दी । जब वे बीमार हो गये तब वह उनकी माता बन गयी । जब अश्क जी सच्चे संगिनी का साथ चाहते तो एक अच्छी संगिनी बन गयी । कौशल्या जी ने अश्क के जीवन में अनेक कार्य किये है वह कभी-कभी प्रेरक, सहाय्यक भी बन गयी हैं । इसलिए अश्कजी ने अपनी कविता में इस सहयोग और त्याग के लिए आभार भी प्रकट किया हैं -

"मै तुम्हारा आभारी हूँ ....
तन मन से हार चुका हूँ
लेकिन तुमने
ओ मूर्तिमति ममता, ओ साक्षात् संजीवनि
तुम ने मुझे -
माँ की ममता, बहन का स्नेह , प्रेयसि का प्यार
और संगिनी की आस्था दी ।
मैं तुम्हारा आभारी हूँ । [14]

कौशल्या जी का असीम त्याग का पता तब लग जाता हैं ब्लिट्स के अंतिम पन्ना लिखने वाले प्रसिध्द उर्दू- अंग्रेजी लेखक ख्वाजा अहमद अब्बास ने उनके बारे में लिखा हैं - " कौशल्या अश्क की पत्नी हैं, मित्र हैं, संगिनी हैं, सलाहकार हैं, नर्स हैं, डॉक्टर हैं,

---

14) अश्क　　सडकों पे ढले साये　　पृ.सं. 111

मैनेजर हैं, प्रकाशक हैं - कहूँ कि उसकी दासी हैं, उसकी मालिक हैं, वह स्वय भी अच्छा लिख सकती थी, लेकिन उसने अपने साहित्यिक शौक को अपने पति की महत्वकाक्षाओं के लिए होम कर दिया । अश्क ने उपन्यास सृजे, कहानियाँ, नाटक, कविताएँ सृजीं, कौशल्या ने अश्क की जिंदगी सृजी । अश्क निरन्तर अपनी रचनोओं की नोंक-पलक सँवारते रहे और कौशल्या उनकी जिंदगी की नोंक-पलक दूरुस्त करती रही । लोग कहते है अश्क यूसुफ हैं और कौशल्या उसकी जुलैखा, अश्क मजनूं हैं और कौशल्या उसकी लैला, लेकिन सच्ची बात यह हैं कि वह सावित्री हैं जो अपने सत्यवान को यमराज के चंगुल से छुडा लायी हैं । " [15]

6. **नीलाभ प्रकाशन की स्थापना और उद्देश्य :-**

अश्क जी को 1948 पंचगनी से डेढ-पौने दो वर्ष बाद मुक्त किया । यह वर्ष तो बहुत ही संघर्ष का वर्ष रहा हैं । अश्क जी बीमारी के कारण काफी घबरा गये थे । उसी समय ही कौशल्या जी ने पहले यू.पी. सरकार से और 1949 में केंद्र सरकार से ऋण लेकर ' नीलाभ प्रकाशन गृह ' का निर्माण किया । अश्क जी को बाकी लोगोंने प्रकाशन के बारे में बहुत ही सलाह दी थी । लेकिन उन्होंने कभी किसी का नहीं माना क्योंकि वास्तव में उनको अपनी सहयोगिनी कौशल्यापर पूरा विश्वास था और उन्हें हमेशा लगता था कि वह साहित्यिक लेखन और प्रकाशन में कोई बाधा नहीं आने देगी । इसलिए अश्क जी ने बाकी लोगों का न मानते हुए बडे आत्मविश्वास के साथ कह दिया कि - ' मैं वचन देता हूँ कि मैं प्रकाशन भी चलाऊँगा और अपने लेखक को भी चुकने नहीं दूँगा । ' इतना निश्चित रुप से कहा जा सकता हैं कि अगर इसमें कौशल्या जी का अथक परिश्रम, त्याग, दृढ विश्वास और लगन न होती तो यह कभी भी संभव नहीं था । यह बात अश्क जी भी मानते हैं । उनका कहना हैं कि अगर पत्नी का इतना सहयोग न होता तो मैं कब का प्रकाशन गृह बंद कर देता । इसलिए अश्क के प्रकाशन गृह की साध पूरी करने के लिए संगिनी कौशल्या जी ने जान की बाजी लगाकर प्रकाशन गृह

---

15) ख्वाजा अहमद अब्बास अश्क: एक रंगीन व्यक्तित्व पृ.सं. 102

को बचा लिया । कौशल्या जी के इस सहयोग के बारें में कृष्णचंद ने ' नाटककार अश्क ' में ठीक ही लिखा है - " उनकी इंजिन ड्राइवर पत्नी कौशल्या हैं । कौशल्या को अश्क की तबीयत के सारे कल-पुर्जे मालूम हैं । अधिकांश पत्नियों की यह आदत होती हैं कि वे उन कल-पुर्जों में तेल देने के बदले रोडे अटकाती हैं । और इस तरह अपने महत्व का एहसास भी दिलाती हैं । पर कौशल्या ने अश्क के लिए अपने-आपको मिटा डाला । वे सच्चे अर्थों में उनकी सहाय्यक, सहयोगी, मित्र, प्रियेसी, प्रशंसक, आलोचक और न जाने क्या-क्या हैं ... ; '

नीलाभ प्रकाशन का कार्य अश्क दम्पति अपने दोनों लडकों (उमेश और नीलाभ) पर छोडकर मुक्त हो गये हैं । नीलाभ ' प्रकाशन गृह ' में पहले सिर्फ ' अश्क साहित्य ' का ही प्रकाशन होता था । लेकिन धीरे-धीरे इसका कार्य क्षेत्र बृहद होता गया । यह कार्यभार अब लडके ही सँभालते है ।

निष्कर्ष :-

निष्कर्ष के रुप में हम देख सकते हैं कि अश्क का बचपन और यौवन घोर आर्थिक समस्याओं के साथ झूझता हुआ बीता । नौकरी के लिए उन्होंने दर-दर की ठोकरें खाई । लेकिन कभी उन्होंने स्वाभिमान नहीं खोने दिया । आर्थिक विवंचना और साहित्य-सृजन इन दोनों को भी बहुत ही अच्छे ढंग से सँभाल लिया । जब से अश्क जी के जीवन में कौशल्या जी आयी तब उनके वीरान मरुभूमि में भी आशाओं के फूल खिल उठे । फिर से उनके मन में जीने की तमन्ना जाग उठी । कौशल्या जी ने असीम त्याग किया, इसलिए उन्हें जीवन में सफलता मिल गयी । कौशल्या जी का तप किसी सावित्री से कम नहीं और अश्क जी को नयी जिन्दगी, नयी रोशनी देने का श्रेय उन्हीं को हैं । इसलिए उनके साहित्य में इतनी विचारों की गहराई आ गई । कौशल्या जी के प्रोत्साहन के कारण ही अश्क जी का पथ प्रशस्त, सुदृढ और सुगम हो गया ।

-: कृतित्व :-

उपेंद्रनाथ अश्क बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं । हिंदी साहित्य की सभी विधाओं में यह नाम शीर्षस्थ स्थान ग्रहण कर चुका है । नाटककार अश्क, उपन्यासकार अश्क, कवि अश्क, कथाकार अश्क, आलोचक अश्क, संस्मरणकार अश्क-इनमें कौनसा रुप बडा है यह कहना बहुत ही मुश्किल है । कोई विधा उनसे छूटी नहीं । गद्य और पद्य दोनों क्षेत्रों में उनकी लेखनी ने समान रुप से सशक्त रचनाएँ हिंदी साहित्य को दी है । प्रायः ऐसा होता हैं, कि जो सफल कवि है, वह अच्छा गद्यकार नहीं होता और जा सफल गद्यकार होता है, वह अच्छा कवि नहीं होता । अपवाद स्वरुप कुछ लोगों को छोड दिया जाय, तो सभी लोग एक ही विधा के सर्जक दिखाई देते है । लेकिन अश्क जी को दोनों विधा में भी अतुलनीय सफलता मिली है ।

अश्क जी ने साहित्य- जगत में एक कवि के रुप में पदार्पण किया । लेकिन कुछ दिनों बाद उनमें एक ऐसी मानसिक प्रतिक्रिया हुई, जिसके फलस्वरुप उनकी प्रतिभा कविता की ओर से विरक्त हो गई और कहानी की ओर मुड गयी । कल्पना की ऊँची उडान और प्रेम के स्वप्निल वातावरण से उनकी प्रतिभा-परी यथार्थ के ठोस पर उतर आई । कहानी के साथ-साथ उपन्यास, नाटक और एकांकी रचना में भी उनकी प्रतिभा ने गजब का जादू दिखाया और वे अच्छे-से-अच्छे उपन्यास और नाटक हिंदी साहित्य को प्रदान कर सके । इन सब में अश्कजी एक श्रेष्ठ नाटककार के रुप में अधिक सफल दिखाई देते है ।

नाट्य-साधना के क्षेत्र में उनका रचना-कार्य सन् 1937 से प्रारंभ हुआ । प्रथम प्रयास में उनपर द्विजेंद्रलाल राय और प्रसाद की समन्वित शैली का ' जय पराजय ' नाटक पर प्रभाव दिखाई देता है । ऐतिहासिक नाटक के रुप में उसकी सफलता में कोई संदेह नहीं

है । इसके बाद एक सामाजिक नाटककार के रुप में प्रसिध्द हो गये । अश्क जी के नाटकों को यहाँ हम थोडे में कालानुक्रम से देखेंगे ।

-:- अश्क के नाटक -:-

1) **जय पराजय :- (1937)**

यह अश्क का सबसे पहला नाटक है । उनके सभी नाटकों की अपेक्षा यह नाटक बडा है और एक-मात्र ऐतिहासिक नाटक है । इसकी कथावस्तु इतिहास के राजपूत काल से ली गई है । टाड के वर्णित राजस्थान की एक घटना के आधार पर इसका निर्माण हुआ है । मुख्य पात्रों में भी कुछ परिवर्तन नहीं किया गया है ।

राजसत्ता और स्त्री के लिए आदमी कितना हिंसात्मक रुप धारण करता है यह इसमें दिखाया है । इस नाटक लिखने के पीछे अश्क जी का यही दृष्टिकोण था कि सामंतयुगीन नैतिकता, आदर्शवादिता और मर्यादा की थोथी व्यक्तिगत राजपूतों की अहं-भावना पर चोट करना । अपनी व्यक्तिगत आन पर राष्ट्र गौरव के नाम पर कुर्बान कर देते थे । यही उनके पतन की ट्रेजिडी का सबसे बडा व्यंग्य था , इस यथार्थ पर ही अश्क ने मीठा व्यंग्य किया है ।

2) **स्वर्ग की झलक :- (1938)**

यह नाटक आधुनिक मध्यवर्गीय अस्वस्थ सामाजिक जीवनपर व्यंग्य है । इसमें मध्यवर्गीय परिवार की झाँकी प्रस्तुत की गई है । शिक्षित नारियाँ घर में ध्यान देने के बजाए किसप्रकार अपना बनाव-शृंगार कर प्रंशसा पाना चाहती है । आज की शिक्षित नारी अपना दायित्व भूलती जा रही है । अपने मान-सन्मान को बचाने के लिए जो आज मध्यवर्गीय समाज

चला रहा है इसका सही चित्रण इसमें है । नाटक में कुल-मिलाकर चार अंक है ।

नाटक में लेखक ने कम-शिक्षित स्त्रियों को सराहा है । वास्तव में वही स्त्रियां अपने पति को और परिवार को अच्छी तरह से सँभाल सकती है । लेखक ने शिक्षित और अप-टू-डेट स्त्रियों में किसप्रकार असंतुलित प्रवृत्ति होती है और उसके साथ ही रघु की तरह मध्यवर्गीय युवक की भीरुता पर भी चोट कर दी है ।

3) **छठा बेटा :-** (1940)

इस नाटक में मानव के स्वार्थजन्य संबंधों का हास्य-व्यंग्यात्मक चित्रण किया है । साथ ही मानव की अतृप्त आकांक्षाओं का भी उद्‌घाटन कर दिया है । अवकाश प्राप्त कर्मचारी की स्थिति का उद्‌घाटन इसमें किया है । घर के सभी लोग उसे सिर्फ एक बोझ समझते हैं । बेटे और बहुएँ उन्हें नफरत की दृष्टि से देखते है , इसका ही यथार्थ चित्रण इसमें है ।

लेखक ने इसमें पं. बसन्तलाल के माध्यम से उसके मन में अवचेतन रुप में दबी पडी अतृप्त कामना को स्वप्न में साकार कर देने का प्रयास किया है । सूक्ष्म हेत्वाभास ही इस नाटक का आधारभूत तत्व हैं । ' छठा बेटा ' द्वारा मानव की उस आंकाक्षाओं को प्रतीक बनाया है, जो कभी पूरी नहीं होती है । इसमें स्वप्न की स्थिति का भी यथार्थ का स्पर्श हो गया इसका कारण लेखक का कौशल्य मानना चाहिए ।

4) **कैद :-** (1943-45)

इसमें वैवाहिक विषमता का चित्रण है । भारतीय जीवन में नारी किसप्रकार विषमताओं से घिरकर अपना जीवन नष्ट कर रही है, यही दिखाना नाटककार का मुख्य

उद्‌देश्य है । अप्पी (अपराजिता) उन असंख्य नारियों का प्रतीक है जो माँ-बाप के द्वारा किसी ऐसे व्यक्ति के गले मढ़ दी जाती है जिसकी प्रकृति से उनका साम्य नहीं है । फलतः उनका जीवन एक भार बन जाता है । धनवान और प्रतिष्ठित व्यक्ति अपनी पत्नी को सुखी रख सकता है क्या ? यह सवाल भी लेखक ने इस नाटक में किया है । लडकी की सहमति न होते हुए भी उसका विवाह कर देना उसके लिए कैद में बंद करने के बराबर है ।

5) **उडान :- (1943-45)**

अश्क जी ने 1942-43 में ' शिकारी ' नामक नाटक उर्दू में लिखा था । ' शिकारी ' के पात्र और ' उडान ' के पात्र भी वही है लेकिन अंतर सिर्फ उसके उद्‌देश्य और अंत में है । इस नाटक से ही उन्होंने ' उडान ' का बीज बोया ।

' उडान ' में अश्क ने नारी के नवीन सामाजिक सम्बधों को मान्यता दी है । नारी के प्रति जिन गलित दृष्टिकोणों को आज तक समर्थन मिलता रहा है, उसका अश्क ने तीव्र विरोध किया है । इस नाटक की नायिका के विचार से, नारी न तो श्रध्दा और पूजा की वस्तु है, न वासना तृप्ति का साधन मात्र है और न ही वह किसी पुरुष की सम्पति है । वह पुरुष की जीवन संगिनी है और पुरुष को वह इसी रुप में स्वीकार करती है ।

6) **पैंतरे :- (1952)**

' पैंतरे ' हास्य और व्यंग्य-प्रधान यथार्थवादी नाटक है । इसमें बम्बई के फिल्मी-क्षेत्र में काम करने वाले नये-पुराने कवि, अभिनेता, निर्देशक, लेखक और रँगरुट-एकस्ट्रा आदि के, जीवन की झाँकी प्रस्तुत की गई है । इस नाटक में वस्तु के दो आधार है - एक तो मकान की समस्या और दूसरी भारतीय फिल्मी जीवन का यथातथ्य चित्रण ।

इस नाटक में मकान की समस्या के साथ अश्क ने फिल्मी जीवन में व्याप्त स्वार्थ, झूठ-फरेब, चाटुकारिता और समय-साधकता को साकार कर दिया है । नाटक तीन अंक का है लेकिन इसके प्रत्येक अंक में दो दृश्य है । नाटक में स्थान और समय की एकता का संतुलन एवं एक सुत्रता है जो नाटक को स्वाभाविकता प्रदान करती है ।

7) **अलग-अलग रास्ते :- (1944-53)**

यह नाटक आधुनिक नारी की समस्या पर लिखा गया है । इसे पूरी तरह से दुखान्त भी नहीं कहा जा सकता क्योंकि इसमें आशावाद भी है और निराशावाद भी इसलिए सभी पात्रों के अन्तर्मन में एक विकल वेदना है । लडकी के विवाह में पिता अपने दामाद को नहीं देखता बल्कि घर-बार को ही देखता है और बाद में एकांगी देखने पर खुद भी पछताते है । वे लडके की ओर ध्यान नहीं देते लडका किस किस्म का है, उसमें भलाई क्या है, और बुराई क्या है, यह लडकी का पिता नहीं देखता और घर-बार देखकर लडकी का विवाह कर देता है और जीवन भर लडकी का रुदन सुनता है ।

इस नाटक में पुराने संस्कार और नये संस्कारों का द्वंद्व दिखाया है । पुराने संस्कारों की पालनकर्ती राजो और नये विचारों की पालनकर्ती रानी दोनों अपने-अपने स्थान पर अडिग है । राजो उसी पति के साथ किसी भी हालत में रहना चाहती है और रानी अपने पति के साथ किसी भी हालत में रहना पसंद नहीं करती । इसलिए भाई पूरन और रानी घर छोडकर नया रास्ता अपनाते है और राजो अपने ससुरजी के साथ जाकर अपना पुराना मार्ग अपनाती है । दोनों का रास्ता अलग-अलग है ।

8) **अंजोदीदी :- (1953-54)**

' अश्क ' के इस नाटक का केंद्र एक अभिजात्य परिवार है जिसके सभी सदस्य

पूर्ण दृष्टि से संपन्न होते हुऐ भी अपनी जिंदगी नहीं जी पा रहे है । पूरे परिवार पर अंजो के संस्कार हावी हो गये है जो उसे गोद लेनेवाले नानाजी से विरासत मे मिले है । अंजो जीवन को घडी के समान मानती है । और इसी कारण सभी परिवार को अपने संस्कारों के अनुरुप ढाल लिया है । अंजो के पति इंद्रनारायण विवाह के पूर्व हसमुख और स्वच्छन्द प्रवृत्ति के व्यक्ति थे लेकिन अंजो के रौब में आकर उनके सारे ठहाके लुप्त हो गये । अंजो के संकेत पर घर के सभी लोग रेलगाडी के डिब्बे की तरह चले जा रहे है । विरोध के कारण अंजो आत्महत्या कर लेती है । लेकिन वह अपना प्रतिनिधी ओमी के रुप में छोड जाती है । लेकिन श्रीपत उसे भी मार्ग से अलग करने में सफल हो जाता है ।

नाटककार का उद्देश्य अति का विरोध कर संतुलित जीवन का मार्ग प्रशस्त करना है । श्रीपत और अंजो भी असम है । सफाई और नियमबध्दता बुरी वस्तुएँ नहीं है पर अंजो ने उन्हें अति की सीमा पर रख दिया इसलिए वह वस्तु बुरी लगने लगी थी । इसीप्रकार श्रीपत के सैलानपन को स्वीकारने की सलाह भी नाटककार नहीं देता । समयानुसार दोनों से भी लाभ उठाना चाहिए, पर किसी को सनक की सीमा तक ले जाना नितान्त अनुचित है ।

9) **बडे खिलाडी :-**

इस नाटक में विवाह समस्या का विवेचन किया गया है । सुजला मध्यवर्गीय परिवार की एक सामान्य पढी-लिखी लडकी है । उसकी माँ रत्नप्रभा और बाप पाराशर साहब पुराने विचारों में विश्वास रखते है । सुजला के विवाह के विषय में उसकी राय जानना आवश्यक नही समझते । फलतः सुजला का विवाह उसकी इच्छा के विपरीत ' केवल ' के साथ तय हो जाता है । माता रत्नप्रभा को घर में कोई नहीं मानते । केवल और उसकी बहन शीला

रत्नप्रभा की सेवा-शुश्रूषा करके उसे अपने जाल में फँसा लेते है । लेकिन सुजला विराज को चाहती है । अंत में केवल की कलई खुल जाती है । सुजला का भाई इस शादी के विरोध में खडा हो जाता है । साथ ही परिवार के सब लोग सुजला के माता-पिता के विरोध में होते है और इसप्रकार सुजला की सगाई टूट जाती है ।

नाटककार इस नाटक के द्वारा यह संकेत देते है , कि माता-पिता के चुनाव में भी गलती की संभावना है और स्वयं के भी । अतएव माता-पिता अपनी संतानों के भाग्य का निर्णय करे किन्तु उनसे राय लेना ल भूले । दोनों के सहयोग से ही समस्या का सम्यक् समाधान हो सकता है । नहीं तो लडकी जिंदगी भर अपने संसार में सुखी नहीं होती । इस कारण उस का जीवन ही उजड जाता है ।

10) **भँवर :-**

' भँवर ' नायिका प्रधान नाटक है । बदलते हुऐ जीवन मूल्यों के साथ संतुलन स्थापित कर लेना सहज संभाव्य नही है । उच्च शिक्षित नारी अपने ऊपर संतुलन स्थापित नही कर पाती और समस्त स्वच्छन्दताओं की माँग करती है । जब उसके उद्देश्य में व्यवधान आता है तब वह गहन कुंठाओं का शिकार बन जाती है । नारी की यह प्रवृत्ति उसके दाम्पत्य जीवन को विषाक्त बना देती है। प्रतिभा एक सुशिक्षित युवती है उसे जीवन की सभी सुख-सुविधाएँ प्राप्त है । धन, शिक्षा और सौंदर्य से युक्त तथा प्रशंसको से घिरी रहने पर भी वह जीवन से ऊबी हुई है ।

इस नाटक में तीन दृश्य है । नाटककार ने आज के शिक्षित नारी की मनोदशा का चित्रण किया है । नाटककार का इस कृति के पीछे यह उद्देश्य है कि मृगमरिचिका के पीछे भागनेवाला व्यक्ति कभी संतुष्ट नहीं होता वह शत-शत आत्मवंचानाओं का शिकार बन जाता है । वह कभी न पाये जाने वाली आत्मशांति के पीछे भागता है ।

अश्क के एकांकी संग्रह

अश्क के एकांकियों की विषय - वस्तु का सम्बध सामाजिक जीवन की यथार्थता से है । समाज की छोटी - बड़ी अनेक समस्याओं को, मध्य - वर्गीय जीवन के विविध पात्रों को और नाटकीय महत्व रखनेवाली घटनाओं को उनकी यथार्थवादी सूक्ष्म कला - दृष्टि सब का ठीक सन्तुलन करने में सफल हो जाता है । अश्क की सबसे बड़ी शक्ति हास्य और व्यंग्य है । इस तरह हास्य और व्यंग्य से यथार्थवादी सफल प्रयोग करने के बाद भी इस युग के श्रेष्ठ व्यंग्यकार बर्नाड शा का कोई प्रभाव नहीं पड़ा और इसी लिए उन्होंने अपनी मौलिकता को अक्षुण्ण रखा ।

1) **पा पी (1938)**

' पापी ' के निर्माण का आधार मानव की उददाम वासना है । शांतिलाल अपनी पत्नी के बीमारी में साली को उसकी सेवा करने के लिए बुलाता है । पत्नी (छाया) के बीमारी का फायदा उठाकर साली के साथ निकट संबंध स्थापित करता हैं । पत्नी खुद अपनी आँखों से उनका व्यवहार देखती हैं और क्षयरोग का शिकार बन जाती है । रेखा (साली) को अपने कृत्य पर पश्चात्तापहोता हैं । छाया की मृत्यु हो जाती है । रेखा अपने घर चली जाती है ।

नाटककार ने संकेत किया है, कि भारतीय नारी पति के विश्वास के सहारे जीवित रहती है, अतः पुरुष को विवेकवान होना चाहिए; अन्यथा वह अपने पतन के साथ साथ दूसरों के पतन का भी कारण बनता है ।

2) **वे श्या (1938)**

वेश्या भी प्यार की भूखी होती है और इस प्यार को पाने के लिए वह क्या क्या कर सकती है, इसका द्वन्द्वात्मक चित्रण वेश्या में हुआ है । मनुष्य को जीने के लिए सिर्फ धन

ही पर्याप्त नही है, तो किसी के प्यार की भी उतनी जरुरत होती है जितनी जीवन में धन की'।'

3) **लक्ष्मी का स्वागत** (1938)

इस एकांकी में धन की उस लिप्सा का चित्रण हैं जो पशुता की सीमा तक पहुंच गयी है । रोशन के पत्नी की मृत्यु हो जाती है । रोशन पुत्र के सहारे पत्नी की मृत्यु के दु:ख को भुलने का प्रयास करता हैं । पुत्र अत्यंत खतरनाक बीमारी मे फँस गया हैं । पर रोशन के माँ-बाप को जितनी लक्ष्मी की चिंता हैं उतनी संतान की नहीं । माँ-बाप रोशन के विवाह में ज्यादा दहेज लेने के लिए ललच रहे है और बच्चे को बड़ा रिशता पाने में रास्ते का रोडा समझते हैं । बच्चे की मृत्यू का करुण दृश्य उपस्थित हो जाता है । एकाँकीकार ने यह संकेत दिया है, कि व्यक्ति की भावनाओं का आदर न करते हुए धन की माँग दु:खद दृश्य ही उपस्थित कर देती है ।

4) **अधिकार का रक्षक (1938)**

' अधिकार का रक्षक ' में समाज के उस पहलु को उभारा गया है जिसमें समर्थ व्यक्ति बनावटी सहानुभूति का प्रदर्शन कर तथा उच्यादर्शों की दुहाई देकर अपना उल्लू सीधा करते हैं । ऐसे छलि लोग जनतंत्र की रक्षा कभी नहीं कर सकते । भोली - भाली जनता इनके बहकावे में आकर धोखा खाती हैं । एकांकीकार इस ओर संकेत करते हैं कि जनता उनके व्यवहारों के प्रति सजग रहे ।

5) **जोंक (1939)**

' जोंक ' एक प्रहसन है, जो बिना बुलाये मेहमान कि जबर्दस्ती और जोंक की तरह चिपक जाने की प्रवृत्ति उसके द्वारा उत्पन्न विभिन्न परिस्थितियों का चित्रण इसमें किया

गया हैं । 'मान न मान मै तेरा मेहमान ' प्रवृत्ति का एकांकीकार ने हास्यात्मक अंकन इसमें किया हैं ।

6) <u>आपस का समझौता (1939)</u>

'आपस का समझौता ' मे डाक्टरों की रोजगारी का चित्र खींचकर उनके द्वारा किये जानेवाले दुष्कृत्योंपर व्यंग किया हैं । धन के लोभ में मनुष्य दूसरे का अहित करने में तनिक भी नहीं हिचकता । आज आर्थिक प्रवृत्ति इतनी बलवती हो चुकी हैं कि सेवा - भावना और नैतिकता को कोई मूल्य ही नहीं रह गया हैं ।

7) <u>प हे ली (1939)</u>

'पहेली ' एक ऐसा चित्र है जब व्यक्ति अपनी दु:खद स्थिति से अवगत होते हुऐ भी किसी भ्रम में फँसकर कुछ कल्पनाएँ करने लगता हैं । आर्थिक वैषम्य की चक्की में पिसता हुआ आज का युवक अकर्मण्यता से घिर रहा हैं और इच्छाओं की पूर्ती कल्पना लोक में करता दिखाई दे रहा हैं । समस्त मध्यवर्गीय जीवन का असतोंष, अभाव, कमजोरियाँ का विषादपूर्ण चित्र इसमें खींचा हैं ।

8) <u>विवाह के दिन (1940)</u>

इस एकांकी मे विवाह संस्था की त्रुटियों की ओर संकेत किया गया हैं । एकांकीकार का मुख्य आक्षेप पर्दा - पथा पर है जिसके कारण विवाह के पूर्व वर - वधू एक - दूसरे को समझने का थोडासा भी अवसर नहीं दिया जाता । इस प्रकार नाटककार ने बुजुर्गो की गलतियों की ओर संकेत करने के साथ - साथ नवयुवकों की त्रुटियों पर भी आक्षेप किया है ।

9) **देवताओं की छाया में :- (1940)**

यह अश्क का एक एकांकी संग्रह हैं । इस एकांकी संग्रह में सात एकांकी हैं । प्रथम एकांकी ' देवताओं की छाया में ' हैं , ' जोंक , विवाह के दिन, पहेली, लक्ष्मी का स्वागत , आपस का समझौता और अधिकार का रक्षक आदि एकांकी का हैं । ' देवताओं की छाया में ' एकांकी द्वारा एकांकीकार ने श्रमिक वर्ग की कठिनाइयों का चित्रण करके वर्ग-भेद की ओर भी इंगित किया हैं । इसके साथ ही देहाती नारी के जीवन का भी दर्शन कराया हैं जो अपनी सीमाओं में घुटते और तडपते रहने पर भी पति-परायणता में अपूर्व हैं ।

10) **खिडकी :- (1941)**

' खिडकी ' में एक ऐसी युवती की वेदना को चित्रित करने का प्रयास किया गया हैं जो अपने प्रेमी की प्रतीक्षा में यौवन के चार वर्ष दुःख और उदासी में बिता देती हैं । दीर्घ समय के कारण प्रेमी के आने की आशा क्षीण हो जाती हैं और दूसरे की संभावना दिखाई देती हैं । प्रेमी आता हैं और युवती की प्रतीक्षा की खिडकी बंद हो जाती हैं । इसमें प्यार का त्रिकोन लिया गया हैं ।

11) **सूखी डाली :- (1941)**

' सूखी डाली ' में नये पुराने संघर्ष का दिग्दर्शन किया हैं । एकांकीकार ने संयुक्त परिवार से यदि अपेक्षित सुख और संतोष नहीं मिलता, तो ऐसे परिवार को बरबस एक में खींचकर चलाना निरी मूर्खता हैं यही दिखलाया हैं । इस एकांकी में एक अहंवादी कुण्ठित और रुढि ग्रस्त कॉम्पलैक्स का चित्र साकार किया हैं वह अद्वितीय हैं । ऐसी डालियाँ सूखने के लिए ही होती हैं, उपेक्षा की खाद और स्नेह का पानी उन्हें जीवित नहीं रख सकता, यही दिखाना एकांकीकार का मुख्य उद्देश्य था ।

12) **चमत्कार :- (1941)**

' चमत्कार ' एक प्रहसन हैं जिसमें एक दवाँ बेचने वाले के माध्यम से धर्मान्धता का चित्र प्रस्तुत किया गया हैं । कुछ लोग अपने प्रभावशाली वक्तव्य के द्वारा अपनी दवाइयाँ बेचकर अपनी चतुराई का प्रदर्शन करते हैं, साथ ही अपना उल्लू सीधा कर लेते हैं । ' चमत्कार ' की व्यंजना दुधारी हैं - एक ओर वह सामान्य लोगों का अज्ञान ; छिछली धार्मिकता पर व्यंग्य हैं तो दूसरी ओर गढवाली दवाइयाँ बेचनेवाले की धूर्तता का मोहक चमत्कार ।

13) **कामदा :- (1942)**

' कामदा ' में आधुनिक विवाह की समस्या प्रस्तुत की गयी हैं । आज की दुनिया में प्रत्येक आदमी वास्तविकता को छिपाने का प्रयास कर रहा हैं । उसका ध्यान बाह्य तडक-भडक पर पहुँच जाता हैं, यही उनके जीवन की प्रमुख समस्या हैं । एकांकीकार ने यही दिखा दिया हैं कि मानव मूल्यों के समक्ष वैभव हेय हैं और मनुष्य साहचर्य और प्रेम द्वारा बडी से बडी खाई को भी लाँघ सकता हैं ।

14) **मैमूना :- (1942)**

प्रस्तुत एकांकी में ' आमना ' नामक ' एक ऐसी नारी की कथा कही गयी है, जो ऐश्वर्य और वासनांध होकर भटकती रहती हैं । अपने पतियों को धोखा देकर अतृप्त वासना और ऐश्वर्य के मोह में पडकर नित नये पुरुष की चाह के कारण वह अपना जीवन बिगाड देती हैं । आमना अपना मातृत्व भूलकर उद्दाम वासना की एक प्रतिमा बन जाती हैं । एकांकीकार का इसके पीछे यह उद्देश्य है कि नारी ऐश्वर्य और वासनांध बनकर अपना स्वाभाविक कर्म भूलकर लिप्सा के पाने के लिए दर-दर भटकती हैं ।

15) **नया पुराना :- (1941)**

इस एकांकी में सत् और असत् प्रवृत्तियों का चित्रण को विरोधी पात्रों के द्वारा किया गया हैं । आदर्शवादी और धूर्त, लम्पाट लोगों का चित्रण एक नाटक के रिहर्सल के माध्यम से किया हैं । नाटकार इसमें कहना चाहते हैं, कि आजकल लोग यथार्थ को भी आदर्श कहकर उसकी उपेक्षा करने लगे हैं ।

16) **बहनें :- (1941)**

' बहनें ' आधुनिकाओं की ट्रेजिडी का एक करुण दृश्य हैं । पति के चुनाव सम्बन्धी नारी की धारणाओं और आकर्षणों का विशद विवरण इस एकांकी में खींचा हैं और अति आधुनिकपन पर तीखा व्यंग्य किया हैं । आधुनिक फैशन-परस्ती और पाश्चात्य वैवाहिक पध्दति की खोखली पध्दति पर आघात हैं ।

17) **चिलमन :- (1942)**

' चिलमन ' में हरि के चरित्र के मनोवैज्ञानिक स्वरुप को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया हैं । बीमार पत्नी किरण और शशि के प्रेम में भी हरि उलझ गया हैं । ' चिलमन ' प्रतीक रुपमें जड और जंगम दोनों में भी प्रयुक्त किया गया हैं । वास्तव में हरि ग्रंथियों का शिकार हैं । बीमार पत्नी की मृत्यु के बाद शशि उसकी दुनिया में नही आ सकती ।

18) **चरवाहे :- (1942)**

इस एकांकी का मूल ' सेक्स ' की समस्या हैं । रानी नामक एक ग्रामबाला इसका केंद्र हैं । उसके जीवन की घुटन और निराशा की अभिव्यक्ति के लिए एकांकी की रचना की गई

हैं । प्यार और सहानुभूति की भूखी रत्नी मामी के प्रति विद्रोह कर उठती हैं । चरवाहों का गीत उसके हृदय में स्पंदन, एक गति निर्माण करता हैं । इसलिए कामना वश होकर रत्नी साहसी गोविंद के साथ भाग जाती हैं ।

19) **चुम्बक :- (1942)**

इस एकांकी की मूल समस्या भी ' सैक्स ' ही हैं । इस एकांकी का केंद्र कवि गौतम हैं जो चुम्बक की तरह गोपा और सरिता को अपने इर्द - गिर्द घुमाता हैं । सरिता रोमांटिक युवती हैं और गोपा संयमित और बौध्दिक हैं । गोपा गौतम के जाल से संयम और स्वाभिमान के कारण बच जाती हैं ।

20) **तौलिये :- (1943)**

तौलिये की समस्या भी ' अंजो दीदी ' की तरह ही हैं । अंजो के समान ही तौलिये की मधु भी ' मार्बिड ' किस्म की औरत हैं । एकांकीकार ने इसमें भी यही दिखाया है, कि मनुष्य की आदतें बदल सकती हैं लेकिन बचपन के संस्कारों से मुक्ति पाना इतना आसान नहीं हैं । यह एक ऐसी बात हैं कि शिकारी ने शिकार करना भले ही छोड दिया हो लेकिन शिकार देखकर उसकी बाँह अनायास ही फडकने लगती हैं ।

21) **पक्का गाना :- (1944)**

' पक्का गाना ' एक प्रहसन है जिसमें फिल्मी जगत् में संगीत तथा काव्यादि कलाओं के साथ किये जाने वाले दुर्व्यवहारों का व्यंग्यात्मक चित्र प्रस्तुत किया हैं । आज लोक अर्थ-लोभ के कारण कला का गला किसप्रकार घोंट रहे हैं, साथ ही एकांकीकार का मुख्य

उद्देश्य हैं। विज्ञजनों ने इस प्रवृत्ति को निकालकर साहित्य और संस्कृति की रक्षा करनी चाहिए

22) **तूफान से पहले :- (1946)**

सन 1946 ई. में भारतवर्ष में साम्प्रदायिक दंगो की जो आग भडक उठी थी उसी का यथार्थ चित्रण इस एकांकी में चित्रित किया हैं । झूठी खबर उठाकर साम्प्रदायिक दंगे का चित्रण कर एकांकीकार ने लोगों की मूर्खता पर व्यंग्य किया हैं ।

23) **कइसा साब कइसी आया :- (1946)**

एक चरित्र-प्रधान मनोवैज्ञानिक एकाकी हैं जिसमें एक साहब और एक आया की चारित्रिक दुर्बलता का चित्रण किया गया हैं । इस एकांकी में बम्बई में बोली जाने वाली खिचडी हिंदुस्तानी भाषा का प्रयोग बडे प्रवाहपूर्ण ढंग से किया हैं । चरित्र के साथ लोकभाषा का मेल सर्वप्रथम अश्क ने ही किया हैं ।

24) **अंधी गली के आठ एकांकी :- (1949)**

' अंधी गली ' हिंदी नाट्य साहित्य में एक नवीन प्रयोग हैं । यह एक पूरा नाटक भी हैं और एकांकी सग्रंह भी । वह इसलिए पूरा नाटक है कि इसके सब अंक परस्पर संलग्न रहकर कथा को गतिशील बनाते हैं और गली के निवासियों के जीवन तथा उसकी मनोदशाओं का चित्र अंकित करते हैं । यह एकांकी संग्रह भी है, इसलिए कि इसका प्रत्येक अंक अलग-अलग कर देने पर उसके अभिनेयता में कोई बाधा नही आती । भारत-विभाजन के बाद जिन समस्याओं एवं भ्रष्टाचारों का सूत्रपात हुआ, उन्हीं का चित्र ' अंधी गली ' में प्रस्तुत किया गया हैं । इसमें नाटककार ने शरणार्थियों की समस्या का अत्यन्त मार्मिक और जीवन्त चित्र

जीवन का चित्र खींचा है । इसके साथ ही शरणार्थी - पुर्नवास से सम्बध्द आधिकारियों की धाँधली, रिश्वतखोरी,पक्षपात एवं अन्याय का व्यंग्यपूर्ण चित्रण किया गया है ।

25) **पर्दा उठाओ । पर्दा गिराओ ।** : (1950)

यह एकांकी संग्रह है इसमें सात प्रहसन संकलित है । ' पर्दा उठाओ । पर्दा गिराओं । ' इस एकांकी में एमेचर क्लबों की कठिनाइयों का हास्यमय चित्र प्रस्तुत किया गया है । नाट्य प्रदर्शन में होनेवाली गडबडी का वास्तविक चित्रण देखकर दर्शक हँसते - हँसते लोट पोट हो जाते हैं । इसमें हास्य का जो शुध्द रुप और सहजता है वह अन्यत्र दुर्लभ हैं । ' पर्दा उठाओ । पर्दा गिराओ । ' यह हास्य - व्यंगात्मक प्रहसनों की एक अनमोल निधी है ।

26) **ब त सि या** : (1950)

इस एकांकी में एक भारतीय मध्यवर्गीय ईसाई नारी के स्वाभिमानी निश्छल, सत्यपरकता और स्पष्टवादी व्यक्ति का चित्रण है । पदोन्नति के साथ ही आदमी का स्वाभिमान भी बढ़ जाता है इसका भी मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है । आज के वकील सच को मिटट्टी में गाढ़कर झूठ और अपराधी भावनाओं को किसप्रकार दाना पानी दे रहे है यह भी दिखाया है ।

27) **कस्बे के क्रिकेट क्लब का उद्घाटन** : (1950)

इस एकांकी में कथानक नहीं है । यह मूलतः एक भाषण है जिसके माध्यम से उद्घाटन की खोखली औपचारिकता पर व्यंग किया गया है । उद्घाटन का आयोजन करनेवाले निहित स्वार्थ के खातिर उद्घाटनकर्ता की उपयुक्ता की परवाह नहीं करते इसलिए एकांकीकार का मुख्य उददेश्य उद्घाटन कर्ता और उसके आयोजक पर व्यंग करना है ।

28) **मस्केबाजों का स्वर्ग :- (1951)**

इसमें सिने - क्षेत्र का चित्र अंकित है । जिसमें योग्यता और प्रतिभाशाली लोगों के लिए कुछ स्थान नहीं दिया जाता तो मस्केबाज लोग नाम और धन पा लेते हैं । सिनेमा से राष्ट्रीय संस्कृति का जो पतन हो रहा है, पूँजीपति लोक कला, साहित्य, संस्कृति और देश की ही इज्जत दाँव पर लगा रहे है ।

29) **साहब को जुकाम है :- (1954-60)**

इस संग्रह में पाँच एकांकी संकलित है । सभी एकांकियों की कथावस्तु यथार्थवादी है । ' किसकी बात ' यह एक प्रहसन है जिसमें नारी से पुरुष की श्रेष्ठता का प्रश्न उठाया हैं । ' फादर्ज ' यह एक शिल्प की दृष्टि से नया प्रयोग है । ' कुसुम का सपना ' में कुसुम नामक एक नारी के ह्दय की अनुभूतियों का चित्र प्रस्तुत किया है । ' घपले ' में रेडिओ के प्रसारण में होनेवाली गडबडी का मनोरंजक चित्र हैं । ' साहब को जुकाम है ' इसमें कला - प्रेम की आड में होने वाले कुत्सित कार्यो का चित्र प्रस्तुत कर तथाकथित कला - प्रेमियों पर व्यंग्य किया गया है ।

-:- अश्क के उपन्यास -:-

नाट्य साहित्य के साथ - साथ अश्क का उपन्यास साहित्य भी समृध्द है । उन्होंने एक से एक सुंदर उपन्यास हिंदी साहित्य को दिये है । अश्क सभी विधाओं में अपनी कलम दृढता के था चलते है इसलिए ही उनका साहित्य ' सोने पे सुहागा ' की तरह लगता है । नीचे अश्क जी के उपन्यास कालानुक्रम के अनुसार दिये है ।

1) सितारों के खेल .. 1937

2) गिरती दीवारें .. 1947

3) गर्म राख .. 1952

4) बडी - बडी आँखें .. 1954

5) पत्थर अलपत्थर .. 1957

6) शहर में घूमता आईना .. 1963

-:- कहानी संग्रह -:-

अश्क जी हिंदी साहित्य में कहानी लेखक के रुप में प्रथम सामने आ गये । अश्क की लेखन रुचि उनके शिक्षण काल से ही दिखाई देती है । विद्यार्थी दशा में ही उनका ऊर्दू कहानी संग्रह ' नौरत्न ' प्रकाशित हो चुका था । प्रेमचंद की प्रेरणा से अश्क हिंदी में लेखने लगे । इसी समय से अश्क की कहानियाँ अबाध गति से बहती हुई दिखाई देती है । अश्क जी विलक्षण प्रतिभा के स्वामी है, अंतः भाषा परिवर्तन में उन्हें कोई कठिनाई नहीं आयी । आज उनकी कहानियाँ 250 के आस - पास मिलती है । अनेक कहानी संग्रह में कहानियाँ संगृहीत है । कुछ कहानियाँ मासिक पत्रिका में भी मिलती है । अश्क का कहानी के क्षेत्र में भी सन्मान से लिया जाता है ।

1) पिंजरा .. 1945

2) छीटें .. 1949

3) निशानियाँ .. 1947

4) दो धारा .. 1949

5) काले साहब .. 1950

6) बैंगन का पौधा .. 1950

7) जुदाई की शाम का गीत .. 1951

8) कहानी लेखिका और जेहलम के सात पुल 1957

9) सत्तर श्रेष्ठ कहानियाँ .. 1958

10) अश्क की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ .. 1960

11) पलंग .. 1961

12) आकाशचारी .. 1966

13) रौबदाब .. 1966

14) वासना के स्वर .. 1967

-:- काव्य - संग्रह -:-

अश्क का रुप जितना गद्यकार के रुप में निखर आया है उतना पद्यकार के रुप में नहीं । साहित्य में कवि के रुप में उनकी चर्चा बहुत कम ही मिलती है । उनका लेखन तमाम विधाओं में बटा हुआ है और यह निर्णय करना कठीण है कि उन्होंने किस विधा से शुरुवात की है । अश्क का कवि रुप गौण होते हुए भी साहित्य में कम महत्वपुर्ण नही है यह मानने में तनिक भी संकोच नही होता कि अश्क पहले कवि है, बाद में और कुछ । कालक्रमानुसार काव्य - संग्रह

1) बरगद की बेटी .. 1949

2) दीप जलेगा .. 1950

3) चाँदनी रात और अजगर .. 1952

4) सडकों पे ढले साये .. 1960

5) खोया हुआ प्रभा मंडल .. 1965

6) अदृश्य नदी .. 1976

-:- निबन्ध लेख, पत्र, डायरी और विचार ग्रंथ -:-

1) ज्यादा अपनी कम परायी .. 1950

2) रेखाएँ और चित्र .. 1958

-:- अ नु वा द -:-

1) स्टीन बैक - ये आदमी ये चूहे (उपन्यास) - 1950

2) ऐंटन चेखव - रंग साज - 1958

3) दास्तवस्की - डर्टी स्टोरी - 1959

-:- स म्पा द न -:-

1) प्रतिनिधि एकांकी .. 1950

2) रंग एकांकी .. 1956

3) संकेत .. 1956

-:- सं स्म र ण -:-

1) मण्टो मेरो दुष्मन .. 1956

नि ष्क र्ष :-

अश्क की सृजन शक्ति से उनके लेखन कार्य का हम अनुमान लगा सकते है । सभी क्षेत्र में उन्होंने अपनी कलम सफलता से चलाई है और हर क्षेत्र को नया अलोक दे दिया । उपन्यास, कहानी, नाटक और काव्य के क्षेत्र में वे विशेष प्रसिध्द रहे है । ' गिरती दिवारें ' और ' गर्म राख ' यथार्थवादी उपन्यास है । ' छठा बेटा ' , ' अंजोदीदी ' और कैद

उनके सफलतम नाटक है । एकांकी नाटकों में ' अधिकार का रक्षक ' 'सूखी डाली ', चिलमन आदि एकांकी के सफलतम उदाहरण है ।

अश्ककी कहानियाँ प्रेमचंद की तरह आदर्शोन्मुख यथार्थवादी दिखाई देती है । अश्क के सभी विधाओं मे रचना - शिल्प परिपुर्ण दिखाई देता है । अश्क के सभी क्षेत्रों मे नाटक, उपन्यास, कहानी और काव्य में भी जो भी चित्रण आया है , वह उनके जीवन का यथार्थ चित्रण है । श्री उपेंद्रनाथ ' अश्क ' सर्वतोन्मुखी प्रतिभावान, हिंदी के अग्रगण्य साहित्यकार, लुब्ध प्रतिष्ठित कहानीकार, प्रख्यात उपन्यासकार एवं रंगमंचीय दृष्टि से सफल नाटककार और एकांकीकार के रुप में बहुश्रुत है ।